Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12** ] [ Total No. of Printed Pages : **3**

# APF–2005

## M.A. (Final) Examination, 2022

## HINDI

Paper - IV **(ख)**

**(प्रेमचंद)**

*Time : **3** Hours* ] [ *Maximum Marks : **100***

**खण्ड–अ** **(अंक : 2 × 10 = 20)**

**नोट** :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

**खण्ड–ब** **(अंक : 8 × 5 = 40)**

**नोट** :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

**खण्ड–स** **(अंक : 20 × 2 = 40)**

**नोट** :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

**खण्ड–अ**

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

   (i) प्रेमचन्द जी के अनुसार एक सच्चे कलाकार का क्या स्वरूप बताया गया है ?

   (ii) प्रेमचन्द जी ने साहित्य का आदर्श किसे माना है ? बताइए।

   (iii) 'सेवासदन' उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

(iv) 'सेवासदन' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष बताते हुए यह स्पष्ट कीजिए कि उसमें आदर्शवाद है या यथार्थवाद।

(v) 'ग्रामीणों में वैमनस्य के विपरीत सहयोगात्मक प्रवृत्ति होती है।' इस कथन को रंगभूमि के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(vi) सूरदास ने औद्योगीकरण की क्या हानियाँ बताईं ? लिखिए।

(vii) 'शान्ति' कहानी के नामकरण की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

(viii) 'बेटों वाली विधवा' कहानी के पात्र सीताराम का वर्णन कीजिए।

(ix) कर्बला नाटक के स्त्री पात्रों पर टिप्पणी लिखिए।

(x) कर्बला नाटक की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

**खण्ड–ब**

**नोट** :– निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. 'कला, कला के लिए' का समय वह होता है, जब देश सम्पन्न और सुखी हो। जब हम देखते हैं कि हम भाँति-भाँति के राजनीतिक और सामाजिक बंधनों में जकड़े हुए हैं, जिधर निगाह उठती है, दुख और दरिद्रता के भीषण दृश्य दिखाई देते हैं, विपत्ति का करुण-क्रन्दन सुनाई देता है, तो कैसे संभव है कि किसी विचारशील प्राणी का हृदय न दहल उठे ?

3. उपन्यास के विषय का विस्तार मानव चरित्र से किसी कदर कम नहीं है। उसका सम्बन्ध अपने चरित्रों के कर्म और विचार उनके देवत्व और पशुत्व, उनके उत्कर्ष और अपकर्ष से है। मनोभाव के विभिन्न रूप और भिन्न-भिन्न दिशाओं में उनका विकास उपन्यास के मुख्य विषय हैं।

4. यह विचार उन लोगों के लिए है, जिनके प्रेम वासनाओं से युक्त होते हैं। प्रेम और वासनाओं में उतना ही अन्तर है, जितना कंचन और काँच में। प्रेम की सीमा भक्ति से मिलती है और उसमें केवल मात्रा का भेद है। भक्ति में सम्मान और प्रेम में सेवाभाव का आधिक्य होता है। प्रेम के लिए धर्म की विभिन्नता कोई बंधन नहीं। ऐसी बाधाएँ इस मनोभावना के लिए हैं, जिसका अन्त विवाह है, उस प्रेम के लिए नहीं, जिसका अन्त बलिदान है।

5. उन्होंने कभी रिश्वत नहीं ली थी। हिम्मत न खुली थी। जिसने कभी किसी पर हाथ न उठाया हो, वह सहसा तलवार का वार नहीं करता। यदि कहीं बात खुल गई तो जेलखाने के सिवा और कहीं ठिकाना नहीं, सारी नेकनामी धूल में मिल जाएगी। आत्मा तर्क से परास्त हो सकती है, पर परिणाम का भय तर्क से दूर नहीं होता। वह पर्दा चाहता है। दारोगा जी ने यथासम्भव इस मामले को गुप्त रखा। मुख्तार से ताकीद कर दी, कि इस बात की भनक भी किसी के कान में न पड़ने पाये। थाने के कान्सटेबलों और अमलों से भी सारी बातें गुप्त रखी गईं।

6. किसी मानुषीय या नैतिक नियम से इस व्यवस्था का औचित्य सिद्ध करना कठिन था। मैं इस वाद-विवाद की गर्मा-गर्मी में अक्सर तेज हो जाता और लगने वाली बातें कह जाता। लेकिन ईश्वरी हारकर भी मुस्कुराता रहता था। मैंने उसे कभी गर्म होते नहीं देखा। शायद इसका कारण यह था कि वह अपने पक्ष की कमजोरी समझता था। नौकरों से वह सीधे मुँह बात न करता था। अमीरों में जो एक बेदर्दी और उद्दण्डता होती है, उसका उसे भी प्रचुर भाग मिला था।

7. "प्रेम के शब्द में कितना जादू है। मुँह से निकलते ही जैसे सुगन्ध फैल गई। जिसने सुना, उसका हृदय खिल उठा। जहाँ भय था, वहाँ विश्वास चमक उठा। जहाँ कटुता थी, वहाँ अपनापन छलक पड़ा। चारों ओर चेतनता दौड़ गई। कहीं आलस्य नहीं, कहीं खिन्नता नहीं। मोहन का हृदय आज प्रेम से भरा हुआ है। उसमें सुगंध का विकर्षण हो रहा है।"

8. भलाई या बुराई किसी खास मुल्क या कौम का हिस्सा नहीं होती। वही सिपाह जो एक बार मैदान में दिलेरी के जौहर दिखाती है, दूसरी बार दुश्मन को देखते ही भाग खड़ी होती है। इसमें सिपाह की खता नहीं, उसके फेल की जिम्मेदारी उसके सरदार पर है। वह अगर दिलेर है तो सिपाह में दिलेरी की रूह फूँक सकता है। कम-हिम्मत है, तो सिपाह की हिम्मत को पस्त कर देगा। आप रसूल के बेटे हैं, आपको भी खुदा ने वही अक्ल और कमाल अता किया है। यह क्योंकर मुमकिन है कि आपकी सोहबत का उन पर असर न पड़े। कूफा तो क्या, आप हक को भी रास्ते पर ला सकते हैं। मेरे ख्याल में आपको किसी से बदगुमान होने की जरूरत नहीं।

## खण्ड-स

**नोट** :- निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)।

9. 'सेवासदन' उपन्यास के नारी पात्र 'सुमन' के चरित्र की विशिष्टताओं को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

10. औपन्यासिक तत्वों के आधार पर 'रंगभूमि' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

11. प्रेमचन्द द्वारा रचित कहानी-संग्रह मानसरोवर भाग-1 में संकलित 'पूस की रात' अथवा 'बड़े भाई साहब' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए।

12. चरित्र विधान की दृष्टि से कर्बला नाटक की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।